स्वामी विवेकानंद

विषयसूची-

- जीवन परिचय
- स्वामी विवेकानंद के विचार
- कृतियाँ
- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त
- स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन
- शिक्षा का अर्थ
- शिक्षा के उद्देश्य
- पाठ्यक्रम
- बालक का स्थान
- शिक्षक का स्थान
- जनसाधारण की शिक्षा
- स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन

स्वामी
विवेकानंद
का जीवन
परिचय
https://www.jivaniitihashindi.com

जीवन परिचय

- **12 जनवरी 1863** -- कलकत्ता में जन्म
- उनका असली नाम नरेंद्र दत्त था।
- **1879** -- प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकत्ता में प्रवेश
- **1882-86** -- रामकृष्ण परमहंस से सम्बद्ध
- **1884** -- स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण; पिता का स्वर्गवास
- **4 जुलाई 1902** -- महासमाधि

स्वामी विवेकानंद के विचार:-

- संभव की सीमा जानने का एक ही तरीका है, असंभव से भी आगे निकल जाना।
- हर काम को तीन अवस्थाओं से गुज़रना होता है – उपहास, विरोध और स्वीकृति।
- यदि परिस्थितियों पर आपकी मजबूत पकड़ है तो जहर उगलने वाला भी आपका कुछ नही बिगाड़ सकता।

एक बार किसी शख्स ने
स्वामी विवेकानंद से पूछा,
'सब कुछ खोने से ज्यादा
बुरा क्या है?'

स्वामी जी ने जवाब दिया,
'उस उम्मीद को खो देना,
जिसके भरोसे पर हम सब कुछ
वापस पा सकते हैं।'

कृतियाँ

उनके जीवनकाल में प्रकाशित:-

- संगीत कल्पतरु
- कर्म योग
- वर्तमान भारत (बांग्ला में),
- ज्ञान योग
- राज योग

मरणोपरान्त प्रकाशित:-

- भक्ति योग
- Practical Vedanta
- Addresses on Bhakti Yoga
- The East and the West
- Inspired Talks (1909)

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त:-

- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
- बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार व्यक्ति को अपनी रूचि को महत्व देना चाहिए
- सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जान चाहिये।
- शिक्षा, गुरू गृह में प्राप्त की जा सकती है।
- शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट का होना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ

- स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल उन सूचनाओं से ही नहीं है जो बालिकाओं के मस्तिष्क में बलपूर्वक डाली जाती हैं ।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार -" यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते और विश्व कोष ऋषि बन जाते ।"

शिक्षा के उद्देश्य

- पूर्णत्व को प्राप्त करने का उद्देश्य
- शारीरिक एवं मानसिक विकास का उद्देश्य
- आत्मविश्वास तथा श्रद्धा एवं आत्म त्याग की भावना का उद्देश्य
- चरित्र निर्माण का उद्देश्य
- नैतिकता तथा आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य

पाठ्यक्रम

- स्वामी जी ने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए धर्म दर्शन, पुराण, उपनिषद, साधु संगत, उद्देश्य तथा कीर्तन और अलौकिक समृद्धि के लिए, भाषा, भूगोल, विज्ञान, मनोविज्ञान, कला, व्यवसायिक विषय, कृषि, खेल -कूद और व्यायाम आदि विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

शिक्षा पद्धति

- चित्त की वृत्तियों का योग द्वारा निरोध करना
- मन को केंद्रीय करण विधि द्वारा विकसित करना
- ज्ञान को व्याख्यान तक विचार-विमर्श अनुभव तथा रचनात्मक कार्यों एवं उद्देश्यों द्वारा अर्जित करना ।
- शिक्षक के गुणों तथा चरित्र का बुद्धि द्वारा अनुकरण करना ।

बालक का स्थान

- स्वामी जी ने भी बालक को शिक्षा का केंद्र बिंदु माना तथा बताया बालक लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के ज्ञान का भंडार होता है वह पेड़ तथा पौधों की बात ही स्वयं ही स्वाभाविक रूप से विकसित होता है
- "अपने अंदर जाओ और उपनिषदों को अपने से बाहर निकालो । तुम सबसे महान पुस्तक हो, जो कभी थी अथवा होगी । जब तक अंतरात्मा नहीं खुलती समस्त बाहरी शिक्षण व्यर्थ है ।"

शिक्षक का स्थान

स्वामी जी को स्वा शिक्षा में विश्वास था

प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं शिक्षक है बाहर शिक्षक तो केवल ऐसे सुझाव प्रस्तुत करता है

शिक्षक एक दार्शनिक मित्र धर्म पथ प्रदर्शक है, जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है ।"

जनसाधारण की शिक्षा

- "मैं जनसाधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप समझता हूं । यह हमारे वतन का मुख्य कारण है कि जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर उपयुक्त से अच्छा अच्छा भोजन अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जाएगी तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी ।"

लडकियों को शिक्षा देने पर वे स्वत: ही अपने प्रश्नों को हल कर लेंगी। स्त्री शक्तिस्वरुपा हैं, वह रुप से साक्षात लक्ष्मी हैं, गुणों से सरस्वती है, वह साक्षात जगदंबा है। संपूर्ण समाज की धाली भारतीय स्त्री हृदय से कार्य करेगी और अपने साथ ही समाज की भी उन्नती करेगी।

- स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद और अनुशासन

- स्वामी जी के अनुसार अनुशासन का अर्थ आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना। इस संदर्भ में हमारा निवेदन है कि जब तक मनुष्य आत्म तत्व की अनुभूति नहीं करता, तब तक उसके द्वारा निर्दिष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता है और आत्म तत्व तत्व की अनुभूति करने में उसे पूरा जीवन लग सकता है। स्पष्ट है कि विद्यालय अनुशासन की बात स्वामी जी नहीं कर पाएस्पष्ट स्पष्ट है की विद्यालय अनुशासन की बात स्वामी जी नहीं कर पाए। विद्यालय अनुशासन का हमारी दृष्टि से यह अर्थ होना चाहिए कि अध्यापक और बच्चे सभी अपने प्राकृतिक स्वा पर नियंत्रण कर सकें समाजिक नियम और आदर्शों के अनुकूल आचरण करने के लिए अंदर से प्रेरित हो और आत्मा की अनुभूति करने के लिए निरंतर अग्रसर रहें।

स्वामी विवेकानंद और विद्यालय

- स्वामी जी विद्यालयों को जन कोलाहल से दूर स्थापित करने के पक्ष में थे एक और जन शिक्षा स्त्री शिक्षा और उद्योग शिक्षा की बात और दूसरी ओर जन कोलाहल से दूर विद्यालयों की स्थापनाजनसंख्या विस्फोट के इस युग में यह कैसे संभव है।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन

- स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में प्रगतिवाद आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद आदि सभी मुख्य मुख्य दार्शनिक विचार धाराओं की झलक दिखाई पड़ती है
- स्वामी जी के शिक्षा संबंधी विचारों में प्राचीन तथा आधुनिक विचारों का समन्वय है
- डॉ आर एस मनी के शब्दों में - "गलत है इस बात का प्रचार करना था कि लोगों में श्रद्धा तथा पीर का विकास हो वह आत्मा का ज्ञान प्राप्त करें तथा अपने जीवन को दूसरों की भलाई के लिए त्याग दें । यही थी उनकी इच्छा तथा आशीर्वाद ।"

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- सक्सेना,एन.आर. स्वरूप & निगम एस. (2016) स्वामी विवेकानंद. *शिक्षा के दार्शनिक परिदृश्य.* (प्रथम संस्करण) आर लाल बुक डिपो .353-364.
- HTTPS://WWW.HINDISAHITYADARPAN.IN/2016/06/SWAMI-VIVEKANANDA-BIOGRAPHY-HINDI.HTML
- HTTPS://HINDI.WEBDUNIA.COM/SWAMI-VIVEKANANDA-SPECIAL/SWAMI-VIVEKANAND-BIOGRAPHY-119011100054_1.HTML
- HTTPS://EN.WIKIPEDIA.ORG/WIKI/SWAMI_VIVEKANANDA

Thank you!